डा·व्यंकटेश वामन कोटबागे
एम·ए·पीएच·डी·
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
जि·सातारा, महाराष्ट्र

प्रमाणपत्र

मैं, डा·व्यंकटेश वामन कोटबागे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, किसन वीर महाविद्यालय, वाई, जि·सातारा, यह प्रमाणित करता हूँ, कि श्रीमती कुमुदिनी मेंडा ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर की एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध "काव्य नाट्य में भाषा सौन्दर्य 'अंधाकुआं' और 'अंधायुग' के परिप्रेक्ष्य में" , मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए है मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं श्रीमती कुमुदिनी मेंडा के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

V.V. Kotab 25/6/97
हस्ताक्षर

डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे
निर्देशक

वाई
दिनांक - 25/6/97

प्रस्थापन

मैं प्रतिज्ञा करती हूँ, कि मेरे संशोधन का विषय "काव्य नाट्य में भाषा सौन्दर्य 'अंधाकुआं' और 'अंधायुग' के परिप्रेक्ष्य में सर्वथा मौलिक है। इसके प्रस्तुतीकरण के पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया हैं।

S. Kumudini
25/6/97

श्रीमती मेंडा कुमुदिनी
शिक्षिका
सेंट पीटर्स स्कूल,
पंचगनी,
जि. सातारा, महाराष्ट्र

पंचगनी
दिनांक
25/6/97

अध्याय - 1

विषय प्रवेश

भूमिका

नाटक का अध्ययन उसके तत्व तथा रंगमंच का लेकर होता रहा है । नाटक में काव्य नाटक का स्वरुप अलग ही होता है । काव्य - नाट्य में भी विशेषकर उसकी भाषा अलग प्रकार की होती है । अतः मैने काव्य नाट्य में भाषा सौन्दर्य पर विशेष अध्ययन करने का विचार किया । यह बात जब सामने आयी तब सर्वप्रथम अंधायुग मेरे समक्ष आया । एक कवि की लिखी हुई नाट्य रचना जो सफलतापूर्वक रंगमंच पर भी कई बार प्रस्तुत हुई है । इसके भाषा सौन्दर्य पर विचार करते समय लक्ष्मी नारायण जी का ' 'अंधा कुंआं ' नाटक भी मेरे हाथ आया । अतः मैने इस नाटक की भाषा पर भी विचार किया । इस प्रकार दोनो नाटकारों के भाषा सौन्दर्य पर विचार किया । पर अंधायुग पर विस्तारपूर्वक विचार करने के कारण, शीर्षक में ' काव्य नाट्य में भाषा सौन्दर्य शब्द प्रयुक्त किया गया है । प्रस्तुत शोध प्रबंध में 5 अध्याय हैं । प्रथम अध्याय को विषय प्रवेश शीर्षक देकर नाटक पर विचार करते हुए ' अंधायुग ' और अंधा कुंआं यही नाटक क्यूं चुने गए हैं, यह स्पष्ट किया गया है ।

इससे अध्याय में काव्य नाटक की परम्परा देकर आलोच्य नाटकों का सर्वेक्षण किया है । तीसरा अध्याय जिसमें भाषा सौन्दर्य पर विचार किया गया है , इस प्रबंध का महत्वपूर्ण अंश है । चौथे अध्याय में रंगमंचीय बोध को लेकर आलोच्य नाटकों पर विचार किया गया है और समापन में अपने निष्कर्ष दिये हैं ।

अपने इस लघु शोध प्रबंध के समापन का सम्पूर्ण श्रेय मैं अपने श्रद्धेय गुरुवर श्री कोडवाणे को देना चाहूँगी । समय, असमय कांये गये निर्देशन को उन्हें आत्मीयता पूर्वक देकर मुझे अनुग्रहित कर दिया । अतः धन्यवाद जैसा शब्द कहकर मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धा , कृतज्ञता और स्नेह को मूल्यहीन नहीं करना चाहूँगी ।

मेरे हृदय में अध्ययन के महत्व का सूत्रपात करने वाली मेरी माताजी **श्रीमत प्रेम अमोलिक** की मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे खूब पढ़ो आगे बढ़ो जैसा मूल मंत्र सिखाया ।

अपने पति **श्री प्रकाश मेंढा** की भी मैं आजन्म आभारी रहना चाहूँगी जिन्होंने मुझे हर क्षण, हर पग, कभी प्रेम से, कभी स्वाभिमान को चोट पहुंचाकर मुझे सतत इस दिशा में आगे बढ़ते रहने पर बाध्य किया ।

अपने सभी आत्मीय स्वजनो का आभार भी प्रगट करना चाहूँगी जिनकी मदद, प्रोत्साहन , धीरज , ने मेरे साहस को सदैव बढ़ाया । विशेषकर श्रीमान सिरिल महोदय हमारे शिक्षक प्रमुख जिन्होंने मुझे शाला के कड़े अनुशासन के बाद भी मुझे कभी निर्देशक, कभी ग्रंथालय जाने की अनुमति दी ।

अंत में मैं उस प्रमुख व्यक्ति का भी आभार प्रकट करना चाहूँगी जिसकी ' ना ' शायद इस दिशा में मुझे एक पग भी ना बढ़ाने देती । **' प्रिय कार्तिक '** जिसने मुझे उस समय जाने की आज्ञा दी जबकि उसे मेरी सबसे अधिक आवश्यकता थी ।

अंत मे ' रिलैक्स [illegible] ' सातारा का धन्यवाद करना चाहूँगी । जिन्होंने अल्प समय में टंकन करके शोध प्रबंध को आकार दिया ।

धन्यवाद सहित,

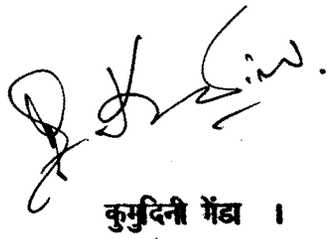

कुमुदिनी मेंढा ।